रिसर्च जरनल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइन्सेस

Peer- Reviewed Research Journal

UGC Journal No. (Old) 40942 Impact Factor 5.125 (IIFS) Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory © ProQuest, U.S.A. Title Id: 715205



2022 www.researchjournal.in

अंक 37 हिन्दी संस्करण

वर्ष - 19

जुलाई-दिसम्बर 2022

रिसर्च जरनल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइन्सेस

Peer-Reviewed Research Journal

UGC Journal No. (Old) 40942 Impact Factor 5.125 (IIFS) Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest U.S.A. Title Id: 715205

अंक-37

हिन्दी संस्करण

वर्ष-19

जुलाई - दिसम्बर 2022

डॉ. अखिलेश शुक्ल

ऑनरेरी सम्पादक प्राध्यापक, समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभाग उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, नैक 'ए' ग्रेड शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.) प्रतिष्ठित भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवार्ड तथा पं. गोविन्द वल्लभ पंत एवार्ड से सम्मानित akhileshtrscollege@gmail.com

डॉ. संध्या शुक्ल

प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, नैक 'ए' ग्रेड शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.) drsandhyatrs@gmail.com

डॉ. गायत्री शुक्ल

अतिरिक्त निदेशक, सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज, रीवा shuklagayatri@gmail.com

डॉ. आर. एन. शर्मा

सेवानिवृत्त आचार्य, उच्च शिक्षा, रीवा rnsharmanehru@gmail.com



सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज, रीवा

की मुख्य शोध पत्रिका म.प्र. सोसायटी रजिस्ट्रेशन एक्ट, 1973 के अंतर्गत पंजीकृत पंजीयन क्रमांक 1802, सन् 1997

विषय विशेषज्ञ/परामर्श मण्डल

- 1. डॉ. अरविंद जोशी, सेवानिवृत आचार्य, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी arvindvns@outlook.com
- 2. डॉ. रामशंकर, कुलपति, पं. शम्भूनाथ शुक्ल विश्वविद्यालय, शहडोल rs dubey@yahoo.com
- 3. डॉ. डी. एस. राजपूत, आचार्य, डॉक्टर हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय सागर drdiwakarrajeut@rediffmail.com
- 4. डॉ. बी. के. सिंह, आचार्य, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी imdrbrajesh.kv@gmail.com
- 5. डॉ. अंजली श्रीवास्तव, सेवानिवृत आचार्य, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा

anjali apsu@rediffmail.com

- 6. डॉ. बी. पी. बडोला, सेवानिवृत्त आचार्य, कांगड़ा हिमाचंल प्रदेश bpbadola@gmail.com
- 7. डॉ. आभा सक्सेना, सह प्राध्यापक, अग्रसेन कन्या स्वशासी महाविद्यालय वाराणसी drabhasaxena7@gmail.com
- 8. डॉ. प्रज्ञा मिश्रा, आचार्य, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट pragyamishramgcgv@gmail.com
- 9. डॉ. आशीष सक्सेना, आचार्य, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद उत्तर प्रदेश। ashish.ju@gmail.com
- 10. डॉ. ज्योति उपाध्याय, आचार्य, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन मध्य प्रदेश drjyotiupadhyay11@gmail.com
- 11. डॉ. प्रमिला पुनिया, सह प्राध्यापक, इतिहास, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर राजस्थान pramilapoonia@rediffmail.com
- 12. डॉ. मृदुल जोशी, आचार्य, गुरुक्तुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार dr mriduljoshi@yahoo.com
- 13. डॉ. शैलजा दुबे, प्राध्यापक, शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय भोपाल shailjadubey70@yahho.in
- 14. डॉ. प्रमिला श्रीवास्तव, आचार्य, शासकीय कला महाविद्यालय कोटा राजस्थान dr21pramila@gmail.com
- 15. डॉ. जयशंकर शाही, आचार्य, अलवर राजस्थान jayshankarshahi@gmail.com
- 16. डॉ.एन. पी. त्रिपाठी, सेवानिवृत्त आचार्य, रीवा मध्य प्रदेश
- 17. डॉ. राजेश भट्ट, एच. एन. बी. केंद्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखंड rajeshbhatt11@gmail.com

Guide Lines

- **General:** English and Hindi Editions of Research Journal are published separately. Hence Research Papers can be sent in Hindi or English.
- Manuscript of research paper: It must be original and typed in double space on the one side of paper (A-4) and have a sufficient margin. Script should be checked before submission as there is no provision of sending proof. It must include Abstract, Keywords, Introduction, Methods, Analysis, Results and References. Hindi manuscripts must be in Devlys 010 or Kruti Dev 010 font, font size 14 and in double spacing. All the manuscripts should be in two copies and in Email also. Manuscripts should be in Microsoft word program. Authors are solely responsible for the factual accuracy of their contribution.
- References: References must be listed cited inside the paper and alphabetically in the order- Surname, Name, Year in bracket, Title, Name of book, Publisher, Place and Page number in the end of research paper as under- Shukla Akhilesh (2018) Criminology, Gayatri Publications, Rewa: Page 12.
- **Review System:** Every research paper will be reviewed by two members of peer review committee. The criteria used for acceptance of research papers are contemporary relevance, contribution to knowledge, clear and logical analysis, fairly good English or Hindi and sound methodology of research papers. The Editor reserves the right to reject any manuscript as unsuitable in topic, style or form without requesting external review.

लेखकों से निवेदन-

- रिसर्च जरनल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइंसेज (ISSN-0973-3914) सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज की मुख्य शोध पत्रिका है, जो मानव संसाधन मंत्रालय तथा पंजीयक समाचार पत्र एवं पत्रिका, भारत सरकार नई दिल्ली द्वारा पंजीकृत हैं।
- शोध पत्रिका उलिरच इन्टरनेशनल पीरियाडिकल्स डाइरेक्ट्री प्रोक्वेस्ट, संयुक्त राज्य अमेरिका से इंडेक्स्ड और लिस्टेड हैं।
- शोध पत्रिका का अंग्रेजी एवं हिन्दी संस्करण अलग-अलग प्रकाशित होता है।
- रिसर्च जरनल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइंसेस का प्रकाशन प्रतिवर्ष जून एवं दिसंबर में किया जाता है।
- रिसर्च जरनल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइंसेस को इम्पैक्ट फैक्टर एवं आई.एस.एन प्राप्त हैं। शोध पत्रिका Peer-Reviewed हैं।
- शोध पत्रिका के नवीनतम अंक में प्रकाशित शोध पत्रों को हमारी वेबसाइट www.researchjournal.in (Current Issue) में देखा जा सकता है तथा डाउनलोड किया जा सकता है।
- 🍨 शोध पत्रिका का प्रिंट एडीशन सदस्यों को अलग से डाक द्वारा भेजा जाता है।
- शोध पत्र में शीर्षक, नाम, पद, पदस्थापना का विवरण, पत्र व्यवहार का पता तथा दूरभाष क्रमांक,
- मोबाइल नं., ई-मेल एडेस अवश्य दिया जाये।
- शोध पत्र के प्रारम्भ में कम से कम 50-100 शब्दों का सारांश दिया जाये।
- मुख्य शब्द सारांश के नीचे टाइप कराया जाये।

- शोध पत्र में शोध पद्धति तथा शोध में प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण किया जाना चाहिए।
- शोध पत्र में निष्कर्ष और अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची दी जाये। संदर्भ ग्रंथों का विवरण पूरा दिया जाये। लेखक का नाम, वर्ष, पुस्तक का नाम, प्रकाशक का विवरण, प्रकाशक का स्थान और पृष्ठ संख्या आदि का विवरण दिया जाना चाहिए।
- शोध पत्र माईक्रोसॉफ्ट वर्ड की फाइल में टाइप किया हुआ होना चाहिए। (नोट- पेज मेकर की फाइल, पी.डी.एफ. फाइल, स्कैन मैटर आदि में कदापि शोध पत्र न भेजें) शोध पत्र हिन्दी लिपि में कृतिदेव या देवलिस फांट 010(फॉन्ट साइज 14, स्पेस डबल, मार्जिन ए-4 साईज के कागज में चारो तरफ 1 इंच) में भेजा जाना चाहिए।
- शोध पत्र के साथ यह घोषणा अवश्य संलग्न करें कि शोध पत्र मौलिक है तथा इसे कहीं अन्यत्र प्रकाशनार्थ प्रेषित नहीं किया गया है।

सर्वप्रथम शोध पत्र ई-मेल द्वारा भेजें-

researchjournal97@gmail.com, researchjournal.journal@gmail.com

शोध पत्र की स्वीकृति की सूचना सम्पादकीय कार्यालय द्वारा लेखक को ई-मेल एवं दूरभाष द्वारा प्रदान की जाती है।

© सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज

एक अंक रुपये 500.00

–सदस्यता शुल्क –		
अवधि	व्यक्तिगत सदस्यता	संस्थागत सदस्यता
वर्ष एक	2000-00	2500-00
वर्ष दो	2500-00	4000-00

सदस्यता शुल्क की राशि गायत्री पब्लिकेशन्स के स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, ब्रांच-रीवा सिटी (आईएफएस कोड 0004667 MICR Code 486002003) के खाता क्रमांक 30016445112 में जमा की जाय।

प्रकाशक:

गायत्री पब्लिकेशन्स

रीवा- 486001 (म.प्र.)

मुद्रक:

ग्लोरी ऑफसेट

नागपुर

संपादकीय कार्यालय

186/1, विन्ध्य विहार कॉलोनी लिटिल बैम्बीनोज स्कूल कैम्पस रीवा- 486001 (म.प्र.) दूरभाष- 7974781746

E-mail- researchjournal97@gmail.com, researchjournal.journal@gmail.com www.researchjournal.in

रिसर्च जरनल में प्रस्तुत किये गये विचार और तथ्य लेखकों के हैं, जिनके विषय में सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज, सम्पादक मण्डल, प्रकाशक तथा मुद्रक उत्तरदायी नहीं हैं। रिसर्च जरनल के सम्पादन एवं प्रकाशन में पूर्ण सावधानी रखी गई है, किन्तु किसी त्रुटि के लिए सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज, सम्पादक मण्डल, प्रकाशक तथा मुद्रक उत्तरदायी नहीं हैं। सम्पादन का कार्य अव्यावसायिक और ऑनरेरी हैं। सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र, रीवा जिला रीवा (म.प्र.) रहेगा।

सम्पादकीय

समाज की मूलभूत और सबसे महत्वपूर्ण इकाई प्रारंभ से परिवार ही रहा है। देश के सशक्तिकरण एवं विकास के लिए सबसे पहले परिवार जैसी बुनियादी संस्थाओं के नैतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक आयामों पर हमें ध्यान देना अति आवश्यक है। समाज के विकास के लिए परिवार का संतुलित विकास अति महत्वपूर्ण है। अत: हमें यदि देश का संपूर्ण एवं संतुलित विकास करना है तो हमें परिवार नामक बुनियादी संस्था पर सबसे ज्यादा जोर देने की आवश्यकता है। आवश्यकता इस बात की है कि हम परिवार में पुत्र और पुत्री के बीच कोई भी भेदभाव ना करें और यह हम अपने पुत्रों को आवश्यक रूप से समझाएं और उनके क्रियाकलापों में शामिल भी करवाएं। आज भी पुरानी मान्यता के जो लोग हैं, उनका यह मानना है कि औरत को कोई आजादी नहीं मिल सकती, वह अकेले कहीं नहीं जा सकती हैं, वह अकेले कहीं घूम-फिर नहीं सकती हैं, लेकिन इन मूल्यों को आज का युवा मानने से इनकार करता है।

कुछ लोग यह भी कहते हैं कि मकान में जो महत्वपूर्ण स्थान दीवालों का का होता है, समाज में वही महत्व लड़कों की शिक्षा का है। लेकिन घर बनता कैसे है? घर के आधार में कौन हैं? घर के आधार में हमारी पुत्रियां हैं, हमारी लड़िकयां हैं, अर्थात उनका संबंध जड़ से है। समाज में अगर हमारी जड़ ही कमजोर हो गई तो हमारा घर या मकान बिल्कुल मजबूत नहीं हो सकता है। इस सामाजिक संदर्भ को यथार्थ में समझने की आवश्यकता है।

पक्षपात की हद तो तब हो जाती है जब छोटे छोटे कार्यों में हमें भेदभाव दिखता है। कुछ लोगों ख्याल है कि लड़की पराया धन होती है, उसे कौन सी नौकरी करनी है। इसलिए कुछ मां-बाप लड़के और लड़की में भेदभाव करते हैं और यह भेदभाव हमारे व्यवहार में खिलाने-पिलाने में पहनाने-उढ़ाने में भी कहीं ना कहीं दिखाई देता है। यह सरासर अन्याय है। ईश्वर ने लड़के और लड़कियों को एक जैसा मस्तिष्क दिया है और आज लड़कियां बेहतर परिणाम लाकर यह सिद्ध भी कर रही है।

लड़िकयां तो मां-बाप के घर कुछ ही दिन रहती है, इसलिए हमारा यह कर्तव्य है कि हम उनके शिक्षा-दीक्षा, पालन-पोषण पर गहराई से ध्यान दें, तभी हम एक सशक्त समाज की संकल्पना को पूरा कर सकते हैं। ईश्वर ने हमें हमारे बच्चों का ट्रस्टी बनाया है इसलिए हमारा यह कर्तव्य है कि हम पूरे न्याय के साथ सभी सदस्यों के साथ समान व्यवहार करें क्योंकि लड़के और लड़िकयों दोनों में एक जैसी शक्ति है, एक ही आत्मा है। अत: हमें उन्हें विकास का समान अवसर दिया जाना चाहिए।

महिला सशक्तिकरण का मूलभूत उद्देश्य महिलाओं का विकास और उनमें आत्मविश्वास का संचार करना हैं। महिला सशक्तिकरण समाज के संपूर्ण विकास के लिए महत्वपूर्ण है। महिलाओं का सशक्तिकरण सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक प्रघटना है, क्योंकि वे रचनाकार होती हैं। अगर आप उन्हें सशक्त करें, उन्हें शक्तिशाली बनाएं, प्रोत्साहित करें, यह समाज के लिए बेहतर है। महिला और पुरूष सृष्टि निर्माण और मानव समाज के आधार हैं। दोनों एक दूसरे के पूरक है। ये जीवन रूपी रथ के ऐसे पहिये हैं

जिनसे जीवन-यात्रा सुचारू रूप से संचालित होती है। परिवार और समाज में स्थायित्व के लिए दोनों की ही भूमिका समान रूप से महत्वपूर्ण रही हैं। किसी समाज में परिवर्तन और विकास का आधार पुरूषों और महिलाओं के पारस्परिक मेल-जोल, कदम से कदम मिलाकर चलने और दोनों की समान गितशीलता पर ही निर्भर है। किसी भी एक पक्ष के पिछड़ने पर सामाजिक जीवन में अराजक स्थिति निर्मित होती है। मानव जाति का इतिहास इसका साक्षी हैं कि जहाँ महिलाओं की उपेक्षा की गई है, वहाँ समाज का विकास अवरूद्ध हुआ है। सृष्टि की रचना, बच्चों की शिक्षा, परिवार की परवरिश के रूप में महिला की भूमिका पुरूष से कहीं अधिक महत्वपूर्ण होने से समाज रचना में उसकी स्थिति केन्द्रीय हो जाती है। अत: स्त्रियों की उन्नित के बिना मानव जाति और समाज का उत्थान नहीं हो सकता। जहाँ तक भारत का संबंध हैं ''यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता'' अर्थात् जहाँ महिलाओं की पूजा होती है। वहां देवताओं का वास होता है। इस आदर्श के साथ कोई भी भारतीय स्त्री पश्चिमी स्त्री की तुलना में गौरव का अनुभव कर सकती हैं। विद्या का आदर्श सरस्वती में, धन का आदर्श लक्ष्मी में, पराक्रम का आदर्श दुर्गा में, पवित्रता का आदर्श गंगा में, यहाँ तक कि सृष्टि सृजन का आदर्श जगद् जननी के रूप में हमें केवल भारत में ही देखने को मिलता हैं।

(डॉ. अखिलेश शुक्ल) प्रधान सम्पादक

अनुक्रमणिका

01	वीर सावरकर: भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक अविस्मरणीय चरित्र	09
	अरुण श्रीवास्तव	
02	भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उत्तराखंड की महिलाओं का योगदान	15
	राजेश चन्द्र पालीवाल	
03	डॉ. लोहिया का सांस्कृतिक चिन्तन: रामायण मेला योजना के विशेष सन्दर्भ में	20
	सुधा गुप्ता	
04	महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी योजना का समाजशास्त्रीय	25
	अध्ययन (आगरा जिले के पिनाहट विकासखण्ड के विशेष संदर्भ में)	
	भूरी सिंह, अतुल कुमार	
05	भारतीय जीवन में शिवोपासना का धार्मिक महत्व	30
	अशुतोष शुक्ल	
06	महात्मा गाँधी : महिला विकास के प्रति दृष्टिकोण	39
	सीमा श्रीवास्तव	
07	महिला नेतृत्व के साामाजिक एवं आर्थिक पहलुओं का विश्लेषण	44
	(रीवा जिले की पंचायतों के विशेष संदर्भ में एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन)	
	कोमल पांडे, अखिलेश शुक्ल	
08	महिला अपराधिता पुनर्वास एवं जेल व्यवस्था	53
0.0	गजानन मिश्र	
09	घरेलू हिंसाः वर्तमान समय की गहन समस्या व समाधान	60
10	अलका रानी	
10	भारतीय अर्थव्यवस्था और वर्तमान आर्थिक चुनौतियाँ: एक विश्लेषण	66
11	बिन्थ्याचल साह नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: सम्भावनाएँ एवं चुनौतियाँ	70
11	नइ राष्ट्राय शिक्षा नाति 2020: सम्मायनाए एवं युनातिया सिद्धार्थ मिश्र	78
12	।सद्धाथ ।मश्र वैश्वीकरण का सामाजिक- आर्थिक प्रभाव	0.2
12		82
12	अजय सिंह गहरवार, अवनीश सिंह, महानन्द द्विवेदी सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग क्षेत्र में स्टार्टअप योजना	0.2
13	2, , ,	92
1.4	संगीता कुँभारे स्टार्ट अप योजना एवं पिछड़े वर्ग की महिलाओं का	101
14	स्थाट जप पाजना एप पिछड़ पर्ग का महिलाजा का सशक्तिकरण:एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	101
	कृष्ण कुमार पटेल, एस.एम.मिश्रा	
15	सतना जिले में सार्वजनिक वितरण प्रणाली की समस्या एवं समाधान	100
13		108
1.0	गायत्री देवी, आर. पी. गुप्ता	115
16	मध्यप्रदेश में कृषि विकास की संभावनाएं एवं चुनौतियां	115
17	सुनीता सोलंकी पर्यावरण एवं मानव स्वास्थ्य (नईगढ़ी-पिपराही के संदर्भ में)	121
1/	वंदना मिश्रा	121
	역도에 (부정)	

18	शहडोल संभाग में पर्यटन विकास का पारिस्थितिकी पर प्रभाव	127
	बी. पी. सिंह, सविता पटेल	
19	समाज और संस्कृति की विकास यात्रा (भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में)	133
	दिव्या मिश्रा	
20	शिव ब्रात है?	137
	अशुतोष शुक्ल	
21	श्रीमद्भगवद्गीता में मोक्ष योग	143
	प्रत्यूष वत्सला द्विवेदी	
22	जैवविविधता और मानवीय क्रियाकलाप (पश्चिमी घाट के विशेष संदर्भ में)	147
	सुनील बाबू विश्वकर्मा, आकृति खरे	
23	पराबैंगनी किरणें ओजोन परत को किस तरह प्रभावित करती हैं	152
	मंजरी अवस्थी	
24	भारतीय संस्कृति में स्वदेशी खेलो की प्रासंगिकता का महत्व	156
	ममता	
25	भारतीय संविधान की प्रस्तावना में निहित भावों का विश्लेषणात्मक अध्ययन	166
	पुरूषोत्तम कुमार साहू, अविनाश कुमार लाल	
26	लिंग भेदभाव का महिलाओं के विकास के अवसरों पर पड़ने वाले	171
	प्रभाव का समाजशास्त्रीय अध्ययन (सतना जिले के विशेष संदर्भ में)	
	राधा मिश्रा , अमर जीत सिंह, अजय आर. चौर	
27	महिला एवं बाल विकास योजनाओं का ग्रामीण महिलाओं की पारिवारिक	179
	स्थिति पर प्रभाव (जिला सतना के विशेष संदर्भ में)	
	विमलेश द्विवेदी, अखिलेश शुक्ल	
28	लैंगिक असमानता के कारण एवं समाधान का समाजशास्त्रीय अध्ययन	188
	राधा मिश्रा, अमर जीत सिंह, अजय आर. चौर	
29	महिला नेतृत्व एवं ग्रामीण विकास	194
	(सीधी जिले की त्रिस्तरीय पंचायतों के विशेष संदर्भ में)	
	शिखा पाण्डेय, अखिलेश शुक्ल	
30	बाल मानवाधिकार एवं भारत के समक्ष चुनौतियां	198
	जगदीश प्रसाद, सर्वोत्तम कुमार	
31	भारत में रोजगार की प्रवृत्तियाँ : महिलाओं के विशेष संदर्भ में	203
	कुमुद श्रीवास्तव	
32	पंचायतीराज् अधिनियम का प्रभाव महिला नेतृत्व एवं सामाजिक जागरुकता	210
	(सीधी जिले की त्रिस्तरीय पंचायतों के विशेष संदर्भ में)	
	शिखा पाण्डेय, अखिलेश शुक्ल	
33	अंतर्राष्ट्रीय विधि के अन्तर्गत बच्चों के शिक्षा के अधिकार: भारत के संदर्भ में	117
	जगदीश प्रसाद, सर्वोत्तम कुमार	
34	सल्तनकालीन महोबा	223
	महेन्द्र मणि द्विवेदी, रान् चौरसिया	

UGC Journal No. (Old) 40942, Peer- Reviewed Research Journal Impact Factor 5.125 (IIFS) ISSN 0973-3914 Vol.- 37, Hindi Edition, Year-19, July - Dec. 2022

पर्यावरण एवं मानव स्वास्थ्य (नईगढ़ी-पिपराही के संदर्भ में)

• वंदना मिश्रा

सारांश- इस अनंत विश्व में पृथ्वी ही मात्र एक ऐसा ग्रह है, जिस पर मानव सहित सभी जीवधारियों के लिए अनुकूल दशाएं उपस्थित है अर्थात् इसी पर जीवन संभव है। इसीलिए पृथ्वीं को मानव का घर कहा जाता है। वास्तव में ऐसा इलिए संभव हुआ क्योंकि पृथ्वी का वायुमण्डल है, जिसमें जीवन के लिए आवश्यक गैसें उपस्थित है। वातावरण भी इसका सूचक है। इसमें वायु का महत्वपूर्ण स्थान है। इसी प्रकार जलवायु भी वायुमण्डल से संबंधित है। कहा जा सकता है कि पृथ्वीं पर अनुकूल पर्यावरण के कारण जीवन है। पर्यावरण का शब्दिक अर्थ है- चारों ओर से घिरा हुआ। इसका शब्दकोषीय अर्थ है - आस-पास या पास-पड़ोस अर्थात् पर्यावरण एक परिवृत्त के अन्तर्गत मानव, जीव-जन्तुओं या पादपों की वृद्धि एवं विकास को प्रभावित करने वाली वाह दशाएं, कार्यप्रणाली या जीवन दशाएं आदि सम्मिलत हैं।

मुख्य शब्द - पर्यावरण, वायुमण्डल, जलवायु, पृथ्वीं, स्वास्थ्य, जीव-जन्तु या पादप

प्रस्तावना- किसी स्थान विशेष में मानव के आस-पास भौतिक वस्तुओं का आवरण ही पर्यावरण है। किंतु यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि मानव का अस्तित्व अन्य जीवन-रूपों को अलग संभव नहीं है। अत: इसमें सभी जैविक संख्याएं सम्मिलित होती है। पर्यावरण के लिए कई बार उपसपमन शब्द का भी प्रयोग किया जाता है। पर्यावरण का अवधारणात्मक विश्लेषण-

ओडम के अनुसार- "पर्यावरण, प्रकृति का आवृत्त समूह है, जिसके अन्तर्गत भौतिक दशाओं में किसी भी प्रकार का जीवन उपस्थित है।" पार्क के अनुसार पर्यावरण को इस प्रकार स्पष्ट है – "पर्यावरण का अर्थ उन दशाओं के योग से होता है जो मनुष्य को निश्चित स्थान पर आवृत्त करती है। अत: इस संदर्भ में देश, काल तथा परिस्थितियाँ सिम्मिलित रूप से पर्यावरण का निर्माण करते है।

गाउडी के अनुसार –''पर्यावरण विश्व का समग्रह दृष्टिकोण है क्योंकि यह किसी समय संदर्भ में, बहुस्थानिक त्तवीय एवं सामाजिक–आर्थिक तंत्रों, जो जैविक एवं अजैविक रूपों के व्यवहार/आचार पद्धति तथा स्थान की गुणवत्ता तथा गुणों के आधार पर एक–दूसरे से अलग होते हैं, के साथ कार्य करता है।''

[•] गीता ज्योति शिक्षा महाविद्यालय रीवा (म.प्र.)

संक्षेप में, पर्यावरण एक अविभाज्य समिष्ट है तथा इसकी रचना भौतिक, जैविक एवं सांस्कृतिक तत्वों की पारस्परिक क्रियाशीलता से होती है। उपनिषदों में भी प्रकृति व उसके घटकों के विषय में इस प्रकार कहा गया है – The Universe is the creation of supreme power meant for the benefit of all his creation, Individual species must, therefore, learn to enjoy its benefits by forming a part of the system inclose relation with other species. Let not any species encroach upon the other rights."

मानव को वातावरण की उपज माना गया है। इसलिए कभी-कभी वातावरण का कार्य तात्पर्य केवल प्रकृति दशाओं एवं प्रकृति से ही होता है। इन्हीं प्राकृतिक परिस्थितियों के कारण मानव की संस्कृति प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित और निर्धारित होती है। जिस प्रकार प्राकृतिक दशाओं में समस्त भूमण्डल पर सार्वभौमिक, स्थानीय और अन्तप्रादेशिक भिन्नताएं है, उसी के अनुसार मानव संस्कृति में भी भिन्नताएं पायी जाती है। पारिस्थितिकी पर्यावरण के तत्वों का एक सुनिश्चित तंत्र है, जो पारस्परिक क्रियाओं का प्रतिफल है। कुछ प्रमुख विद्वानों ने पारिस्थितिकी को निम्नानुसार परिभाषित किया है-

राउज के अनुसार, पारिस्थितिकी एक ऐसा विज्ञान है जो जीवित जीवों की जीवन प्रक्रिया और पर्यावरण जिसमें वे निवास करते हैं तथा परस्पर क्रिया करते हैं, का अध्ययन करता है। ए. हैकेल के अनुसार, पारिस्थितिकी जीवों के आववास्य का विद्वान है इसके अन्तर्गत समस्त जीवों और पर्यावरण के संपूर्ण अन्तिक्रिया का अध्ययन होता है जो अपने अस्तित्व के लिये संघर्षरत रहते है। ;ठल मबवसवहल ूम नदकमतेजंदक जीम बपमदबम वि मबवदवउल वि जीम कवउमेजपब ंिपते वि देपउंस वतहंदपेउ पज पदुनपतमे पदजव जीम विसम तमसंजपवद वि देपउंसे ूपजी जीम पदवतहंदपब देक वतहंदपब नततवनदकपदहें दक इवअम सस जीमपत तिपमदकसल दक विजपसम तमसंजपवदे ूपजी नबी देपउंसे दक चसंदजें जीमल बवउम पदजव कपतमबज दक पदकपतमबज बवदजंबज ूपजी वत पदें वितज ूपजी सस जीम पदअवसअमक पदजमतकमचमदकमदज वदबम जींज कंत्र्पदेश कपेहतंबमक जीम बवदकपजपवदे वि जीम जतनहहसम वित मगपेजमदबमण्द एफ.अर्लिड के अनुसार, पारिस्थितिकी समस्त पर्यावरण के संदर्भ में जीवों तथा उनके अर्न्तजातीय एवं आपसी अर्न्तसंबंधों का विज्ञान है।''

सी.एम. साउथविक के अनुसार, पारिस्थितिकी जीवधारियों का परस्पर और उनके मध्य पर्यावरणीय अर्न्तिविदि का अध्ययन है।" उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि पृथ्वी पर उपस्थित भौतिक पास्परिक क्रियाओं एवं जैविक अन्तर्संबंधों का स्वरूप पारिस्थितिकी है। जहाँ तक रोग पास्थितिकी का प्रश्न है वह मानव पर्यावरण अन्तरिक्रयाओं एवं सहलग्नताओं का प्रतिफल है। विशेषताओं के अनुसार इन्हें भौतिक जैविक एवं सांस्कृतिक समूहों में वर्गीकृत किया जाता है। इनके पारस्परिक क्रियाओं का प्रतिफल पृथ्वी पर जीवन का होना है, जो अपने विभिन्न तंत्रों का समूह है। प्रसिद्ध निश्चयवादी भूगोलवेत्ता ने मानव को पर्यावरण की उपज के रूप में संबोधित किया है।

उपरोक्त विचारों से स्पष्ट होता है कि पृथ्वीं पर पाये जाने वाले विभिन्न तत्वों का समिष्ट ही पर्यावरण के यहीं तत्व विभिन्न अनुपातों में सहसंबंधित जीव विशेष के अनुकूल तथा अन्य के प्रतिकूल होती है जिसमें रोगो का प्रस्कुटन एवं संचारण होता है, जो स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। पर्यावरण के इन तत्वों को जिसमें स्वास्थ्य परिस्थितिकी का निगमन होता है, को 2 वर्गों में विभक्त किया गया है –

- प्राकृतिक पर्यावरण
- 2. सांस्कृतिक पर्यावरण

यह उस पर्यावरण का द्योतक है, जिसका निर्माण प्रकृति द्वारा होता है इसके अन्तर्गत समस्त प्राकृतिक भृदृश्य सिम्मिलत है, जैसे – भूमि, जल राशियां, वनस्पित, जलवायु दशाएं, मिट्टयां जीवन-जन्तु, खिनज, भूमि की बनावट एवं स्वभाव इत्यादि। ये सभी पृथ्वी पर अनेक प्रकारों, स्वभाव तथा पदानुक्रम में पाये जाते है। प्राकृतिक पर्यावहरणका संघटन निम्नलिखित रूप से होता है –

- ऽ तथ्य भूमि, जलवायु मिट्टी, खनिज, सूर्यताप आदि।
- शिक्तयां सूर्यपात, भूकम्प, वर्षा, बढ़ता हुआ जल, गुरूत्वाकर्षण शिक्त, पृथ्वी का परिभ्रमण आदि।
- प्रक्रियाएं वे समस्त प्रक्रियाएं जो निरंतर प्राकृतिक वातावरण के निर्माण में संलग्न रहती है। उदाहरणार्थ, बढ़ते हुये जल द्वारा अनेक स्थलाकृतियों का निर्माण,वनस्पति तथा खनिज और जलवाय तत्वों से मिटटों का निर्माण आदि।

अत: इस पर्यावरण का निर्माण प्राकृतिक तथ्यों, शिक्तियों एवं प्रिक्रियाओं के सिम्मिलत योगदान से होता है तथा इसमें मानव का कोई हाथ नहीं होता है। इसे भौगोलिक पर्यावरण भी कहा जाता है। पारिस्थितिकी का संबंध पर्यावरण के भौतिक तत्वों के उन समुच्चयों से है, जो दैनिक विकास एवं उसकी कार्य क्षमता को बनाये रखने से संबंधित है। ये समुच्चय पर्यावरण के भौतिक तत्व होते है, जो निश्चित तंत्र के रूप में कार्य करते है। मानव एवं अन्य सभी जीव समुदाय को आवास्य प्रदान करते है। इस प्रकार पारिस्थितिकी एक प्रकार का तंत्र है, जिसका अभिप्राय उन अन्त:क्रियाओं से है, जो वनस्पित एवं वस्तु जगत् और उच्च पर्यावरण को एक सिक्रय इकाई से जोड़ती है। 1985 में ए.जी. टान्सले ने इसे एक ऐसा क्षेत्र बताया है, कि पर्यावरण में जैविक एवं अजैविक कारकों समन्वय के परिणाम स्थापित हो सके।

स्वास्थ्य पारिस्थितिकी का संबंध पर्यावरण के भौतिक तत्वों के पारम्परिक संबंधों एवं अन्त: क्रियाओं का स्वास्थ्य पर पड़ने वाला प्रभाव है। हमारे आस-पास की सभी परिस्थितियाँ, वस्तुयें एवं भिन्न-भिन्न अवस्थायें जो हमारे आयुमान एवं जीव-यापन को प्रभावित करती है, और हमारे शारीरिक एवं मानसिक विकास पर प्रभाव डालती है, स्वास्थ्य वातावरण बनाती है, स्वास्थ्य पारिस्थितिकी है। पार्क ने मानव के स्वास्थ्य एवं अस्वस्थता में वातावरण को सुखद एवं दोषी माना है। अत: रोग अस्वस्थता का कारण है। स्वास्थ्य उपादान है। जबिक आक्सफोर्ड डिक्सनरी में शरीर के कोई भी अंग-प्रत्यंग जब अचानक कार्य करना बंद करें तो अस्वस्थता माना जाता है। इस अस्वस्थता का संबंध विभिन्न प्रकार के रोगो से है। इस प्रकार स्वास्थ्य पारिस्थितिकी का नजदीकी संबंध रोग पारिस्थितिकी से है।

अखिल विश्व यह मम उपजाया, सब पर मोहि बराबर दाया।⁵

ऋग्वेद के ऋचाओं से स्पष्ट होता है, कि पृथवी पर विभिन्न तत्वों का एकत्रीकरण अकास्मिक घटना बल्कि क्रमिक विकास के प्रक्रियाओं के प्रतिफल है। प्रत्येक तत्वों के विकास पूर्व में उपस्थित घटक तत्वों के अन्तरवर्ती क्रियाओं के प्रतिफल है, अर्थात् नवीन तत्वों का सृजन पूर्ववर्ती तत्वों की पृष्ठभूमि में हुआ। यह क्रम निरंतर चलता रहा, भौतिक तत्वों में ताप के बाद वायु, जल एवं भूमि का सृजन पूर्ण हुआ। इन भौतिक तत्वों की पारस्परिक क्रियाओं एवं आधार संबंधों का एकीकृत स्वरूप जीवों के सृजन की पृष्ठभूमि प्रस्तुत की जिसे जैव पारिस्थितिकी या जैव आवास्य के रूप में संबोधित किया जाता है। मानव अथवा पृथ्वी पर पाया जाने वाला अन्य जीव अपने पर्यावरण की उपज होता है। सभी जीवों की अपनी एक सुनिश्चित पारिस्थितिकी होती है जिसमें उनका जन्म एवं विकास सुनिश्चित होता है। ठीक इसी प्रकार रोगो की अपनी पारिस्थितिकी होती है, जहाँ इनका उद्भव एवं विकास सुनिश्चित होता है।

प्राकृतिक पर्यावरण- प्राकृतिक पर्यावरण के दो वर्ग भौतिक एवं जैविक पर्यावरण के तत्व है। ये दोनो ही तत्व मानव के स्वास्थ्य पारिस्थितिकी को नियंत्रित करते है। प्रमुख प्राकृतिक तत्वों में भू-संरचना उच्चावच, धरातल, प्रवाहप्रणाली, वनस्पित, मृदा, खिनज, पशु एवं मानव रूप में पर्यावरण तत्व जिसमें मानव स्वास्थ्य प्रभावित होता है। उदाहरणार्थ जलवायु के परिवर्तन प्रकृति के अनुसार विषाणु जीवाणु का प्रकोप ताप, वर्षा तथा मानव स्वास्थ्य पर प्र।भाव स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद होते है। इस प्रकार की संरचना जल में भारीपन लाते है, जिसे उदर विकास की संभावनायें बढ़ जाती है। उच्चावच की दृष्टि से यह भू-भाग सामान्य ऊँचाई संवर्ग में है जिसके कारण इसके स्वास्थ्य पर विषमकारी प्रभाव नहीं पड़ते, किंतु इस क्षेत्र में पाये जाने वाली मृदा बलुही एवं दोमट युक्त है, जिसमें रोगाणु काफी समय संरक्षित रहते है। तथा अनुकूल अवसरो पर मानव स्वास्थ्य को प्रभावित करते है। क्षेत्र के प्रमुख खिनजों में चूना प्रमुख है जो पेय जल को भारी कर देता है। निदयाँ अपने आकार में छोटी तथा भूमिगत जल काफी गहराई पर होने के कारण उथले कुआं झरनो का पानी पेय जल के रूप के प्रयुक्त किया जाता है, जो स्वास्थ्यप्रद नहीं है।

जलवायु की दृष्टि से अध्ययन क्षेत्र में अवशिष्ट ऋतुये होती है। वर्षा मानसून प्रकृति से युक्त वर्षा ऋतु में (75 प्रतिशत) होती है। ऋतु परिवर्तन इस भू-भाग की प्रमुख विशेषता है, ऋतुओं के संक्रमण का बार-बार होना स्वास्थ्य की पारिस्थितिकी को अत्यधिक प्रभावित करता है। विभिन्न प्रकार के संचारी रोगों की बारम्बरता वर्षा एवं ग्रीष्म ऋतु में अचानक बढ़ जाती हैं। वर्षा के दिनों में कीट-पतंगो, मच्छरों, विषाणु, जीवाणु की अभिवृद्धि उष्ण-आई मौसम के कारण अधिक अभिवृद्धि करते है और स्वास्थ्य को भी प्रभावित करते है। अक्टूबर का महीना विशेष रूप से मलेरिया के लिये इस क्षेत्र में प्रसिद्ध है। 2008 के आकड़ों के अनुसार कुल 158 व्यक्ति उपचार के लिए केन्द्रो पर पहुंचे जबिक 2015 में कुल 931 व्यक्तियों ने चिकित्सालय में अपना इलाज करवाया। वर्ष 2015 में आये सभी 2949 रोगियों के रोगों की जानकारी प्राप्त करने पर अध्ययन क्षेत्र में रोगों के प्रवृत्ति का बोध निम्नानुसार है -

तालिका क्रमांक 01	
वर्ष 2015 में बीमार व्यक्तियों के रोगो का विवरण	

क्र.	नाम रोग	संख्या	कुल रोगी व्यक्तियों का प्रतिशत
1	मलेरिया	1612	57.83
2	पीलिया	180	2.23
3	वायरल	154	5.52
4	कान दर्द	28	1.00
5	नेत्र दर्द	42	1.50
6	पेट दर्द, ऑव, वात, गैस आदि	608	21.81
7	पेचिस	32	1.14
8	उल्टी दस्त	10	0.35
9	बुखार (टाइफाइड)	06	.21
10	खाज-खुजली फुन्सी फोड़ा	192	6.88
11	सूखा	27	0.96
12	अनिद्रा (तनाव)	04	0.14
13	अन्य	54	1.93
	योग	2949	98.41

स्त्रोत - बी.एम.ओ. कार्यालय जिला रीवा (म.प्र.)

उपर्युक्त तालिका से प्राप्त आंकड़ो के अनुसार मलेरिया सर्दी जुकाम, पेचिस, पेट दर्द, खाज- खुजली पीलिया के रोगी अधिसंख्यक मिले जिससे स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में संचारी रोग का प्रभाव सर्वाधिक है।

निष्कर्षएवं सुझाव-

- सभी जीवधारी और उनका पर्यावरण आपस में अन्तक्रिया करते है और विभिन्न रूपों में एक दूसरे को प्रभावित करते है।
- पर्यावरण, जो वास्तव में कई अन्तर्सबंधित कारको का मिश्रण है और गित'ि।
 है, जीवों के चुनाव में छलनी की तरह कार्य करता है।
- प्रत्येक प्रजाति, संरचना कार्य, पुनरूत्थपादन, वृद्धि व विकास में जनन-पूल के संरक्षण के अनुसार समानता बनाये रखने का प्रत्येक प्रयास करती है। साथ ही ये बदलते पर्यावरण में स्वयं को समायोजित करती है।
- केवल पर्यावरण ही जीवों के जीवन को प्रभावित नहीं करता, वरन् जीव भी अपने वातावरण में परिवर्तन या सुधार करते है। यह तथ्य उनकी वृद्धि विसरण, पुनरूत्पादन, मृत्यु क्षय आदि से स्पष्ट हो जाता है। इस प्रकार ये दोनो अनुक्रमण के विकास में योगदान देते है। समूहों की अंतिम वस्था चरम कही जाती है।
- जब जैव व अजैव दोनों घटकों का संदर्भ लिया जाता है तो प्रकृति की मौलिक संरचनात्मक व कार्यात्मक इकाईयों को परिस्थित-तंत्र कहा जाता है। प्रत्येक जनसंख्या की अपनी विशिष्ट कार्यात्मक स्थिति होती है।
- आदिवासी समाज प्राय: झाड़-फूंक, टोना-टोटका पर वि'वास करते हैं। एक डॉक्टर व एक ओझा में से वे स्वास्थ्य लाभ के लिये ओझा का चयन करते हैं।

- स्थानिक जड़ी-बूटियों पर आदिवासी अधिक भरोसा करते हैं।
- महिलाये प्राय: चिकित्सालय नहीं जाना चाहती।
- आवागमन के साधनों के अभाव के कारण चिकित्सालय तक पहुँचना कठिन होता है। वर्षा के दिनों में सर्वाधिक कठिनाई होती है।
- जो लोग प्राइवेट चिकित्सालय में दवा करवाते है, शासकीय चिकित्सालयों में उनकी प्रवृष्टि नहीं की जाती।

उपर्युक्त कारणों से नईगढ़ी जिला रीवा के पिपराही राजस्व मण्डल में कुल जनसंख्या में रोगी व्यक्तियों का प्रतिशत मात्र 13.81 प्रतिशत है, जबिक क्षेत्रीय सर्वेक्षण के समय इस के विपरीत स्थितियाँ पायी गयी थीं।

निष्कर्ष- यह कहा जा सकता है कि पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी तंत्र का जीवधारियों के स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं इन्हें स्वस्थ्य रखने के लिये स्वच्छ पर्यावणीय वातावरण बनाये रखने की आवश्यकता है। साथ ही सरकार द्वारा संचालित सामुदायिक केन्द्रों में स्वास्थ्य संबंधी जांच कर जनजातीय लोगों एवं सामान्य लोगों को बीमारी से ग्रस्त लोगों को उचित एवं तात्कालिक उपचार की सुविधाओं को प्रदाय किये जाने की आवश्यकता है। यदि स्वस्थ्य समाज रहेगा तो वास्तविक रूप से लोगों के आर्थिक सामाजिक एवं राजनैतिक परिवेश पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। संदर्भ स्त्रोत –

संदर्भ ग्रन्थ सूची-

1. Odum, E.P. (1971) Fundamentals of Ecology, 3rd Ed. W.B. saunders, Philadelphis.

- 4. गोस्वामी तुलसी दास रामचरिस मानस से
- 5. जी.सी.सिंघई- चिकित्सा भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन गोरखपुर, 1995 पृ.7
- 6. District Census 2015, Rewa (M.P.)

Park, C.C. (1950) Ecology and Environmental Management, Butterworths, London.

Goudie, A (1984) The Nature of the Engironment, Basil Balckwell Publication Ltd.